शेख़ फ़रीद - सबद ७
किझु न बुझै किझु न सुझै दुनीआ गुझी भाहि ॥
सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७८

किझु न बुझै किझु न सुझै दुनीआ गुझी भाहि ॥
सांईं मेरै चंगा कीता नाही त हं भी दझां आहि ॥३॥

सार: जब कोई अपनी आंतरिक शक्तियों के प्रति अज्ञानी होता है, जीवन जलती हुई आग की तरह असहनीय लग सकता है। नकारात्मक भावनाएँ भय पैदा कर सकती हैं और व्यक्ति अपनी स्वाभाविक सहनशीलता को खो सकता है। लेकिन जब हम अपनी आंतरिक विवेक का उपयोग करते हैं और अपनी जन्मजात शक्ति पर विश्वास रखते हैं तब प्रगति और सुन्दर विकास के लिए महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्राप्त की जा सकती है।

किझु न बुझै किझु न सुझै दुनीआ गुझी भाहि ॥
जन्मजात ज्ञान को समझे बिना जीवन को समझने के लिए आवश्यक अंतर्दृष्टि प्राप्त नहीं की जा सकती। इसका प्रयोग किये बिना दुनिया एक भयावह, रहस्यमयी आग की तरह दिखाई देती है।

सांईं मेरै चंगा कीता नाही त हं भी दझां आहि ॥३॥
मेरे मार्गदर्शक ने मेरा भला किया है अन्यथा इसके बिना मैं इस दुनिया में भटकते हुए पीड़ा से जल रहा होता। यह इस बात का प्रतीक है कि सार्वभौमिक मूल्य सांसारिक संकट का सामना करने के लिए फायदेमंद हैं। (३)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद इस बात पर जोर देते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर गहराई से निहित विवेक एक मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में कार्य करता है। यह हमें चुनौतियों का स्पष्टता से सामना करने और उद्देश्य के साथ आगे का मार्ग दिखाने के लिए सशक्त बनाता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com